thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 37 09 से 15 अक्टूबर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 आ. शु. 15

आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन एवं बुद्धिजीवी सम्मेलन में

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का

दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के द्वारा किया गया भव्य अभिनन्दन

नई दिल्ली। रविवार, 7 सितम्बर 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्,नई दिल्ली के 36 वें स्थापना दिवस पर योग निकेतन सभागार,पश्चिमी पंजाबी बाग में "राष्ट्रीय आर्य बुद्विजीवी सम्मेलन" का भव्य आयोजन किया गया। सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से 1500 आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों तथा युवा संगठनों के पदाधिकारियों द्वारा भव्य स्वागत तथा सम्मान किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश ने कहा कि आज भ्रष्टाचार, आंतकवाद,पाखण्ड–अन्धविश्वास समाज की जड़ों को खोखला कर रहे हैं, इनका मुकाबला वैचारिक कान्ति से ही किया जा सकता है, विचारों की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति होती है, देश में विघटनकारी ताकतें सर उठा रही हैं सरकार को चाहिये कि देश की एकता अखण्डता से खिलवाड़ करने वालो के साथ सख्ती के साथ पेश आये। देश की आजादी की लड़ाई में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है, आज फिर से आर्य युवकों को राष्ट्रीय एकता अखण्डता की रक्षा के लिये कार्य करना है। स्वामी आर्य वेश ने बढ़ती हुई शराब खोरी की आदत को समाज के लिये घातक बताते हुए आर्य जनों को आगे आने का आह्वान किया। स्वामी जी ने दिल्ली की आर्य समाजों के पदाधिकारियों का उत्साह देखते हुए कहा कि दिल्ली में इस प्रकार के कार्यक्रमों से दिल्ली की जनता में विशेष उत्साह का संचार हुआ है। आज हम आर्यों का कार्य पहले से कहीं अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि आज सबसे बड़ा आघात आर्य समाज को आपसी विघटन से लग रहा है। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज का विघटन समाप्त होना चाहिए और इसके लिए मैं अपने स्तर पर इस विघटन को दूर करने का गम्भीर प्रयास निरन्तर कर रहा हूँ और आप सबसे आशा करता हूँ कि आपलोग इस विघटन को दूर करने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। स्वामी जी ने आशा व्यक्त की यदि दिल्ली की आर्य समाजों ने इस सम्बन्ध में सकारात्मक सहयोग प्रदान किया तो आर्य समाज के एकीकृत करने का जो संकल्प मैंने लिया है उसमें मैं निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करूँगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि चरित्रवान युवा राष्ट्र की अमूल्य सम्पति है और राष्ट्र का भविष्य ऐसे ही नौजवानों पर निर्भर है। आर्य समाज दिग्भ्रमित युवकों को सही दिशा देकर देश की दशा व दिशा को बदलने का कार्य करेगा। उन्होंने कहा कि वर्ग विशेष की तुष्टिकरण की नीति देश की सम्प्रभुता के लिए घातक है,जो एक नये पाकिस्तान को जन्म देगी। उन्होंने कहा कि समय की मांग है कि पूरा हिन्दु समाज एक जुट हो कर आने वाली समस्याओं का मुकाबला स्वयं करे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा कि स्वामी दयानन्द के आदर्शों पर चलकर ही भारतीय संस्कृति व सभ्यता की रक्षा हो सकती है, देश की वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने की अत्यन्त आवश्यकता है तभी हम हिन्दू समाज पर हो रहे चौतरफा आकमण का मुकाबला कर सकते हैं।

दिल्ली प्रदेश भाजपा के नेता सुभाष आर्य ने कहा कि आर्य समाज के सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक है,आर्य समाज की आज पहले से भी अधिक आवश्यकता है,राष्ट्र के समाने आने वाली चुनौतियों का मुकाबला आर्य युवकों को ही करना है।

पूर्व मंत्री श्री मांगेराम गर्ग ने कहा कि आज देश की बहुसंख्यक युवा पीढ़ी के लिए देश व समाज के पास कोई ठोस कार्यकम नही है,आर्य समाज युवा पीढ़ी को पाखण्ड,अन्धविश्वास, गुरूडम वाद से बचा कर उनमें नैतिक शिक्षा,देशभक्ति,ईमानदारी,जातिवाद विहीन समाज की संरचना के लिए कार्य करें।

ओमप्रकाश सिंघल (केन्द्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दु परिषद्) ने कहा कि भारत को विश्व शक्ति बनाना है, लेकिन उसमें विचार शक्ति देने का कार्य आर्य जनों को ही करना है। समारोह का उद्घाटन 'ओ३म्' ध्वज फहरा कर समाजसेवी श्री दर्शन अग्निहोत्री ने किया।

इस अवसर पर महापौर योगेन्द्र चन्दौलिया, मायाप्रकाश त्यागी, वैदिक आचार्य महेन्द्र भाई, यशोवीर आर्य,प्रवीनआर्य(गाजियाबाद),आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद), रामकृष्ण शास्त्री (राजस्थान), भारतेन्दू कुमार (बिहार), रामेश्वर गोयल, यशपाल यश (जयपुर), स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, राजेश्वरमुनि (कैथल), स्वतन्त्र कुकरेजा (करनाल), मनोहर लाल चावला (सोनीपत), आनन्द प्रकाश आर्य (हापुड़), अतुल कोठारी, वीरेन्द्र योगाचार्य, रमेशचन्द स्नेही (हरिद्वार), अजय गुप्ता (अम्बाला), प्रो.सारस्वत मोहन मनीषी (राष्ट्रीयकवि), प्रभातशेखर, डा.धर्मपाल आर्य, योगेन्द्र शास्त्री, पार्षद यशपाल आर्य, आचार्य सुधांशु, संतोष शास्त्री, सुरेन्द्र मानकटाला, देवेन्द्र भगत आदि ने अपने विचार रखे। विद्या भूषण आर्य, शान्ति प्रकाश आर्य,जवाहर भाटिया, प्रवीन तायल, आनन्द प्रकाश वधावन, सुनील गर्ग को "आर्य युवा रत्न अवार्ड" से सम्मानित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार ने यज्ञ करवाया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

वेद का आदेश

- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार

यह सिद्धान्त सर्वविदित है कि संसार में वेद सबसे पुराने ग्रन्थ हैं और वैदिक धर्मी वेदों का प्रादुर्भाव आदि सृष्टि में मानव सभ्यता के प्रादुर्भाव के साथ ही मानते हैं।

ईश्वर ने मनुष्यों के उपयोग के लिए जहाँ नाना प्रकार की वस्तुएँ रचीं वहाँ उन वस्तुओं का उचित उपयोग और व्यवहार बताने के लिए ऋषियों के हृदय में ज्ञान भी प्रेरित किया और उन ऋषियों का संसार में रहन-सहन और पदार्थ के उपयोग और व्यवहार का निर्देश इसी ईश्वर प्रेरित ज्ञान वेद के आधार पर किया।

जिस समय ऋषियों ने वेदों का सन्देश और आदेश मनुष्यों को सुनाया उस समय सब मनुष्य एक ही स्थान पर रहते थे। देश विदेश और अनेक जातियों में मनुष्य बंटे नहीं थे। भाषा भी उस समय सब की एक ही थी और वह भाषा है वेदों की भाषा।

आदि सृष्टि में भगवान ने मनुष्य को कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ मन और बुद्धि प्रदान की तो मनुष्य को स्वभावाभिव्यक्ति करने के लिए भाषा ईश्वर ने ही मनुष्य को प्रदान की। वेद का अभिमत है :-

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत् प्रैरत नामधेयंदधानाः।

(ऋग्वेद 10/71/1)

महान संसार के पालक प्रभु ने प्रथम नाम धारण करने वाली वाणियाँ प्रेरित की।

अब मनुष्य के लिए वेदों का आदेश क्या है यह सुनिए -

प्रत्येक मनुष्य सहृदय बने। सहृदय उसे कहते हैं कि अन्य के कष्टों को अनुभव करें। किसी भी प्राणी को कष्ट में देखकर मनुष्य के हृदय में दर्द उत्पन्न हो।

सामंजस्य का आशय है कि सबके मनों में सामंजस्य हो। सबके अधिकारों की रक्षा हो। सबके मनों में संतोष हो सके ऐसी बात होनी चाहिए। एक दो व्यक्तियों के ही मन की न होना चाहिए। परस्पर द्वेष नहीं होना चाहिए। एक दूसरे के वैभव विकास को देखकर कुढ़े नहीं। और एक-दूसरे को इस प्रकार प्रेम करें जैसा गौ अपने सद्यजात वत्स का करती है।

1. सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।

(अथर्ववेद 3/30/1)

उपर्युक्त मंत्र में जो सामाजिक शिक्षा दी गई है वह कुटुम्ब पर नगर पर और देश पर लागू होती है। मनुष्य मात्र के लिए समान है। बिना सहृदयता के मनुष्य पशु से भी गिरा हुआ है।

यथा "मनुष्य रूपेण वृकाश्चरन्ति" हृदयहीन सहानुभूति शून्य मनुष्य तो मानव रूप में भेड़िया है। यदि समाज में यह एकाकी गुण जाग्रत हो जाए तो सारा भ्रष्टाचार, कालुष्य और कष्ट दूर हो जाये। सहृदयता जन्म जात भी होती है और उसका आधान काव्य शास्त्रों की शिक्षा द्वारा भी किया जा सकता है।

मनों में समझौता रहे, अपने साथ दूसरे के हितों का भी ध्यान रहे यह सब शिक्षा के द्वारा ही सम्पाद न हो सकता है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली इसमें बड़ी सहायक थीं। बचपन से ही विद्यार्थी समूह में रहना सीखते थे। भोजन छादन, रहन-सहन सब सामूहिक होता था, वैयक्तिक नहीं। इसलिए मनों में सामंजस्य रखने का स्वभाव बन जाता था। इस प्रकार आचरणात्मक शिक्षा पाया हुआ व्यक्ति सर्वथा समाजवादी बन जाता था। समाजवाद उसकी आदत बन जाती थी।

द्वेष रहित यदि सब हो जाएँ और एक-दूसरे से जलें नहीं तो सबका ही कल्याण है। जलने वाला दूसरे को हानि पहुँचाने की धुन में अपनी तो हानि पहले ही कर डालता है। परोन्नति को देखकर दुःखी होना अपने ऊपर व्यर्थ का दुःख लादना है। कर्मफल विश्वासी मनुष्य कभी दूसरे को देखकर नहीं जल सकता। और कर्म फल विश्वास आदि का अभ्यास होता है आर्यदर्शन, उपनिषद् गीतादि के निरन्तर स्वाध्याय से। द्वेषरहित होने के लिए सभी को मन पर जमे हुए कषायों का निवारण करना होगा। यह काम बिना साधना के नहीं हो सकता। वह साधना है धर्माचरण। वैदिक धर्म आचरणात्मक धर्म है केवल विश्वासात्मक नहीं। सब मनुष्य एक-दूसरे को प्यार करें। यह सब तब हो सकता है कि विश्व भर की राजनीति एक हो। राजनैतिक बाजीगरों ने कहीं राष्ट्रीयता के नाम पर, कहीं मत सम्प्रदायों के नाम पर, कहीं संस्कृति के नाम पर, कहीं भाषा के नाम पर मनुष्यों में द्वेष बुद्धि भड़का रखी है वेद कहता है :

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसम् नानाधर्माणं पृथिवीं यथौकसम्।। (अथर्व. 12/1/45)

पृथिवी अनेक भाषाओं वालों और अनेक धर्म वाले जनों को यथास्थान धारण करती है। आदि सृष्टि में अनेक भाषाएँ और धर्म नहीं थे फिर वेद ने ऐसा क्यों कहा?कारण है कि उच्चारण और ध्वनि भेद तो प्रत्येक मनुष्य को एक भाषा में भी भिन्न कर देता है। इसी भेद से मनुष्य बोली से पहचान लिया जाता है। धर्म भी गुण, कर्म, स्वभाव के कारण कामों की योग्यता में भेद के कारण भिन्न हो जाते है।। सब मनुष्य एक ही सा उच्चारण करें, एक सा ही सोचें विचारें यह असम्भव है। अतः वेद भगवान् सहिष्णुता का आदेश देते है। भिन्नत्व में भी एकत्व की दृष्टि रखने की शिक्षा देते है। वैदिक अध्यात्म में दृढ़ श्रद्धा से प्राणिमात्र में प्रेम की बुद्धि बन जाती है। वेद का उपदेश है :-

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद् विजानतः,
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः। (यजुर्वेद, 40/7)

अर्थ - जब ज्ञानी सब प्राणियों को आत्मवत् जानने लगता है तब कैसा मोह कैसा शोक। वह सब को एक ही तत्व (जड़ और चेतन जानता है) ऐसा निश्चयात्मक ज्ञान भी बिना स्वाध्याय, सत्संग और साधना के नहीं हो सकता। यह है वेदों की समाज व्यवस्था। वर्णाश्रम विभागों में रहते हुए भी आत्म दृष्टया सब को एक मानकर सबका हित करना। भिन्न वर्तित्व में समदायित्व होना चाहिए। समवर्तित्व से तो अनाचार फैल सकता है। माता, पत्नी, बहिन में बर्ताव सम नहीं हो सकता। कुत्ते और मनुष्य साथ-साथ नहीं खा सकते।

अर्थ व्यवस्था - प्रत्येक व्यक्ति का पुरुषार्थ और बुद्धि भिन्न-भिन्न शक्ति रखता है। अतः सबकी कमाई में भेद होगा ही। परन्तु "शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर" वेद ने आदेश दिया कि सौ हाथों से कमाओं और सहस्त्र में बांटो। दान का उपदेश देकर वेदों ने आर्थिक सामंजस्य स्थापित कर दिया। दान देने से दानी की वृत्ति में उदात्तता आती है और प्रति गृहीता के चित्त में कृतज्ञता उपजती है।

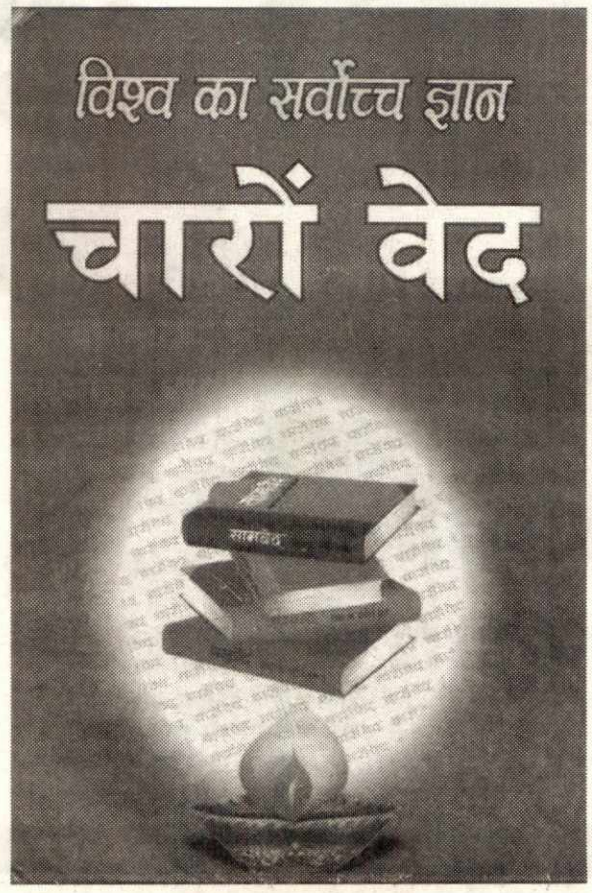

दोनों गुण मानवता के विकास के लिए परमोपयोगी हैं। कानून द्वारा किसी का माल छीनकर किसी को देने से माल वाले के हृदय में क्षोभ, क्रोध और वैमनस्य की भावना उदित होगी और लेने वाले में अभिमान, कठोरता और प्रमाद बढ़ेगा। आज कानूनों द्वारा यही राक्षसी भाव प्रकट होते हैं। दानादि धर्मों द्वारा जो कोमल भावनाएँ बनती थीं वे नष्ट हो रही हैं। वेद ने जिस विषय में समत्व की आवश्यकता थी वह भी बता दिया। सब की विद्या, बुद्धि, बल, धन, वैभव समान नहीं हो सकते परन्तु भोजनादि जीवन के साधन सबको मिलें।

"समानी प्रपा सह वो अन्न भाग"

कोई भी भूखा न मरे इस कार्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक घर में बलिवैश्वदेवयज्ञ की नित्यविधि रक्खी।

"समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।" (अथर्व. 3/30/6)

श्रम का महत्त्व - वेद निठल्ला निकम्मा रहने को बुरा समझता है अतः वेद का आदेश है -

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः" (यजु. 40/2)

सौ वर्ष कार्य करते हुए ही जिओ। प्रत्येक अवस्था में कुछ न कुछ उपयोगी काम करते रहना चाहिए।

"मागृधः कस्य स्विद्धनम्" किसी का धन मत लो। किसी के परिश्रम की वस्तु मत उड़ाओ। वेद कहता है - **"नस्तेयमद्भि"** चोरी का माल मत खाओ। बिना पुरुषार्थ के दूसरों की कमाई पर ही रहना चोरी का माल खाना है। वेदों के उपर्युक्त उपदेश समाजवाद साम्यवाद सबकी पूर्ति निर्दोष रीति पर करते हैं।

ईश्वर के विषय में - लोग कहते हैं कि सृष्टि की प्रारम्भिक दशा में मनुष्य सूर्य, चन्द्र, बिजली, वायु आदि पदार्थों को देवता मानकर पूजता था। एकेश्वरवाद का ज्ञान तो मनुष्य को बहुत दिनों विचार करते रहने के बाद हो सका। इसीलिए वेद में अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, विद्युत की स्तुतियाँ हैं। परन्तु इन ज्ञानाभिमानी लोगों को यह पता नहीं है कि वेद ने अग्नि आदि सब नाम उपासना प्रकरण में ईश्वर के ही बताए हैं :-

'तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः' (यज. अध्याय 32)

वही अग्नि है, वही आदित्य है, वही वायु है, वही चन्द्रमा है।

"एकंसद् विप्राबहुधावदन्ति" ऋग्वेद। ईश्वर एक ही है। उस एक ही अस्तित्व को ज्ञानी लोग बहुत नामों से पुकारते हैं।

"ईशावास्यमिदम् सर्वम्" यजुः। इस सब जगत् में ईश्वर समाया हुआ है। वह सबमें व्यापक है। इससे दूर नहीं है। हमारे उसके बीच में हमारे अज्ञान का पर्दा पड़ा है।

स "ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासुः यजुः। वह सब प्रजाओं में समाया है।

ईश्वर की उपासना ईश्वर के लिए कोई लाभ पहुँचने या खुशामद के लिए नहीं है। केवल अपने अज्ञान को दूर करने के लिए उसके गुणों का चिन्तन करना उपासना है। उसके गुण हम धारण करके मुक्त बनें यही है उपासना का प्रयोजन। ईश्वर निर्लेप है, निराकांक्षी है वह न पूजा भेंट चाहता है न बलिदान। वैदिक यज्ञों का प्रयोजन है वातावरण को शुद्ध नीरोग, प्राणप्रद बनाना। वेदों में दार्शनिक ज्ञान, गणित ज्ञान, आयुर्वेद, संगीत और पदार्थ ज्ञान की चर्चा भी यत्र-तत्र है। वेदों के अनुसार जीवात्मा अमर है, अल्पज्ञ है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है और अज्ञानवश बन्धन में पड़ता है। अपने कर्म फल भोगने के लिए ही अनेक शरीर धारण करता है। योग द्वारा जब कर्म से संस्कार वासना दूर हो जाती है तब मोक्ष पा लेता है। इस प्रकार लौकिक और पारलौकिक सभी विषयों में वेद पुरुषार्थ की शिक्षा देता है वेद कहता है -

"स्वयं वाजिंस्तन्वं कल्पयस्वस्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व महिमा तेऽन्येन न संनशे।" (यजु. 23/15)

हे शक्तिशालिन जीव, अपने शरीर को स्वयं बनाओ अर्थात् अच्छा बुरा शरीर पाना तुम्हारे कर्मों के आधीन है। स्वयं यज्ञ करो अर्थात् कर्म करो और स्वयं उसका फल सेवन करो। तुम्हारी महिमा और से नष्ट नहीं हो सकती। और कोई तुम्हारी महिमा में व्याप्त नहीं होगा। इस प्रकार स्वावलम्बन की शिक्षा देने वाला वैदिक धर्म ही सब मनुष्यों को ग्रहण करने योग्य है। भाग्य पर, देवताओं पर, नबी पैगम्बरों पर भरोसा करना वेद नहीं सिखाता। वेद कहता है अपनी महिमा को, प्रतिष्ठा को तुम स्वयं बना सकते हो। ईश्वर प्रबन्धकर्त्ता है। फलदाता है। परन्तु फलों की प्राप्ति का कर्म तुम्हारे आधीन है। गीता भी कहती है -

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते।। (गीता 5/14)

ईश्वर जीवन के कर्त्तापन, कर्म, कर्म फल संयोग को नहीं रचता। स्वभाव प्रकृति ही इसमें प्रवृत्त होता है। (प्रकृति में नियम और नियंत्रण ईश्वर ने स्थापित कर रखा है) जैन धर्म भी यही कहता है। भौतिकवाद भी कर्म पर विश्वास रखता है इस प्रकार वेद ईश्वर को मानता है। ईश्वर प्रदत्त ज्ञान को मानता है परन्तु पुरुषार्थ की शिक्षा देता है। इससे न भाग्य पर दोष आता है न ईश्वर पर। अपने जीवन के निर्माता यह स्वयं हैं। इसलिए उपनिषद् ने कहा -

"चरैवेति चरैवेति"
चरन् वैमधु विन्दति"

काम करो, काम करो। काम करने वाला ही आनन्द पाता है।

- सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी, नई दिल्ली

ईश्वर की उपासना ईश्वर के लिए कोई लाभ पहुँचने या खुशामद के लिए नहीं है। केवल अपने अज्ञान को दूर करने के लिए उसके गुणों का चिन्तन करना उपासना है। उसके गुण हम धारण करके मुक्त बनें यही है उपासना का प्रयोजन। ईश्वर निर्लेप है, निराकांक्षी है वह न पूजा भेंट चाहता है न बलिदान। वैदिक यज्ञों का प्रयोजन है वातावरण को शुद्ध नीरोग, प्राणप्रद बनाना। वेदों में दार्शनिक ज्ञान, गणित ज्ञान, आयुर्वेद, संगीत और पदार्थ ज्ञान की चर्चा भी यत्र-तत्र है। वेदों के अनुसार जीवात्मा अमर है, अल्पज्ञ है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है और अज्ञानवश बन्धन में पड़ता है। अपने कर्म फल भोगने के लिए ही अनेक शरीर धारण करता है। योग द्वारा जब कर्म से संस्कार वासना दूर हो जाती है तब मोक्ष पा लेता है। इस प्रकार लौकिक और पारलौकिक सभी विषयों में वेद पुरुषार्थ की शिक्षा देता है

thearyasamaj.org

मूर्ति पूजा : मूल में भूल

...गतांक से आगे

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान

सिद्ध पीठ होती हैं, चमत्कार होते है, वरदान आशीर्वाद भी होते हैं, इनके अस्तित्व से हमें इंकार न भी हो तो भी इतना अवश्य है कि उनकी भी एक सीमा है, यह सीमा ईश्वरीय कृपा से ऊपर नहीं है, व्यक्ति के अपने प्रारब्ध से बाहर नहीं है, संत, फकीर, सिद्ध पुरुष ईश्वर नहीं हो सकते। योगदा सत्संग समिति, रांची से जुड़े मेरे एक मित्र ने अपने अनुभव शेयर करते हुए मुझे बताया है कि एक बार उनका शिरडी जाना हुआ। साईं परिसर में बैठकर उन्होंने ध्यान लगाया। सन् 1951 से वे योग साधना करते आ रहे हैं। ध्यान में साईं प्रकट हुए, पूछा बोल क्या चाहिए?मित्र ने कहा जो आपके पास है दे दो। साईं ने कहा यह तो मेरे बस में नहीं, भगवान् के बस में है उसी से मांग। मित्र ने कहा साईं! जो तेरे वश में है वही दे दे। मित्र ने बताया वहीं बैठे-बैठे मेरे अनाहत अर्थात् हृदय कमल (ब्रह्मपुर) में स्फुरण हुआ, असीम आनन्द की अनुभूति होने लगी। योगदर्शन के विभूतिपाद के 34वें सूत्र में उल्लेख है कि यह चित्त का स्थान है, इसमें संयम करने से वृत्तियों सहित चित्त का ज्ञान हो जाता है। मित्र के अनुसार कुछ देर तक यह स्थिति बनी रहीं एक अन्य अनुभव को शेयर करते उन्होंने बताया कि गुरुधारण करने से पूर्व जब उन्होंने अपने अमरीका स्थित भावी गुरु की परीक्षा टैलीपैथी से लेने का प्रयास किया तो भारत में उनसे मिलने पर उन्होंने मेरा तीसरा नेत्र खोल दिया। यह स्थिति केवल तीन महीने तक बनी रही। आगे के लिए उन्होंने बात ईश्वर पर डाल दी कि जब उनकी कृपा होगी तभी इसका पुन: अनुभव होगा, साधना करते रहो। जाहिर है संत, सिद्ध पुरुष ईश्वर नहीं होते, न उनके पास असीम शक्ति होती है, हाँ कभी-कभी चमत्कार दिखा कर वे भक्तों को सन्मार्ग पर चलते रहने की प्रेरंणा, ऊर्जा, सामर्थ्य अवश्य देते हैं। अत्त: व्यक्ति पूजा कभी भी प्रभु पूजा का स्थान ग्रहण नहीं कर सकती। चमत्कारों का मकसद व्यक्ति को ईश्वराभिमुख करना, आराधना युक्त करना होता है न कि चमत्कारों में आसक्ति-बद्ध होकर किसी पाखण्ड को पोषित करना। राम सेतु तैरने वाले पत्थरों से निर्मित हुआ यह एक वैज्ञानिक और तकनीकी सत्य है लेकिन इसमें राम की चमत्कारी शक्ति को आरोपित करना गलत है। तैरने वाले ये पत्थर राम सेतु के पास ही नहीं भारत के दूसरे भागों व दूसरे देशों में भी उपलब्ध हैं। मेरे एक मित्र ने ऋषिकेश में तैरने वाले पत्थर का प्रदर्शन स्वयं अपनी आंखों से देखा था। कुछ दिन पूर्व एक टी. वी. चैनल में भी दूसरे देशों में ऐसे पत्थरों का अस्तित्व दिखा रहा था। इसी चैनल ने जापान में उड़ने वाले पत्थरों का दर्शन भी कराया। इन पत्थरों का इस्तेमाल किसी रूप में आस्था का दोहन करने के लिए यदि धर्माचार्य करते हैं तो उसे पाखण्ड की संज्ञा मिलेगी। आचार्य रजनीश ने अपनी एक पुस्तक में हवाला दिया था कि हिमाचल में जैसे ज्वाला देवी मन्दिर है ऐसा ही एक आस्था स्थल रूस में भी था जहां हजारों श्रद्धालु पहुंचते थे। जब रूस में कम्युनिस्टों का शासन हुआ तो इस स्थल की वैज्ञानिक परीक्षा हुई और पाया गया कि भीतर से कोई ज्वलनशील गैस लीक होती है। जब अन्य उपायों से इस गैस को पूरी तरह खारिज कर लिया गया तो रूस की ज्वाला देवी शांत हो गई और लोगों ने वहां आकर मन्नतें मानना बन्द कर दिया। आज यह आस्था स्थल नाम शेष होकर रह गया है। चमत्कारों में तर्क और विज्ञान का हस्तक्षेप इसलिए जरूरी है कि कहीं स्वार्थी धर्मध्वज इन चमत्कारों को आस्था दोहन का हेतु बना कर ईश्वराधना को विकृत स्वरूप प्रदान न कर सकें। चमत्कारों का रहस्य खुल जाने से आस्था पर गहरी चोट लगती है और व्यक्ति आस्तिक से नास्तिक तक बन जाता है। चमत्कारों में एक आम हिन्दू का गहरा विश्वास होता है अत: इस विश्वास का दोहन करने के लिए स्वार्थी धर्म-ध्वजों ने अनेकानेक किस्से कहानियां गढ़कर जनता में फैला रखे हैं, अमुक स्थान सिद्धपीठ है, अमुक वट-वृक्ष पर धागा बांधने से मन्नत पूरी होगी, हरिद्वार-ऋषिकेश, गंगोत्री से कांवड़ लाने पर फलां-फलां फल मिलेंगे, कैलाश मानसरोवर, बाबा अमरनाथ और वैष्णोदेवी की यात्रा करने से मनोकामना पूरी होंगी, अमुक देवी-देवता के सवा लाख पाठ कराने से संकट टलेगा, सर्प दोष खत्म होगा आदि-आदि। सात्विक जीवन जीने, योग साधना करने, तप-स्वाध्याय-ईश्वर प्रणिधान के क्रिया योग को अपनाने का उपदेश कोई नहीं देता, वेद, उपनिषद, दर्शन पढ़ने का परामर्श कोई नहीं देता बल्कि केवल उन पुस्तकों को शास्त्र की संज्ञा दी जाने लगी हैं जो अवैदिक मान्यताओं का पोषण कर रही हैं। इन्हीं शास्त्रों ने यह भ्रम पैदा कर दिया है कि जीवित संत-फकीर ही नहीं, कब्र और मजारों-दरगाहों में वर्षों से लेटा हुआ मुर्दा भी मन्नतें पूरा कर सकता है। इसी प्रकार का एक अन्य भ्रम है कि अमुक नदी, सरोवर, झील में स्नान करने से जन्म-जन्मांतर के पाप धुल जायेंगे। ये जड़ और भौतिक पदार्थ कैसे पाप धोने के अधिकारी बन सकते हैं?दूरस्थ और निर्धन व्यक्ति तो कभी जीवन भर इस उपाय से पाप-मुक्त हो ही नहीं पायेगा। क्या दूरी व निर्धनता का अध्यात्म या ईश्वराधना से कोई सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है?मन से श्रेष्ठ मन्दिर क्या कहीं अन्यत्र मिल सकता है?तुलसीदास ने इस सन्दर्भ में क्या सुन्दर कहा है :-

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहे कपट छल, छिद्र न भावा॥

खजुराहो, जगन्नाथपुरी के कोणार्क मन्दिर, काशी में नेपाल नरेश के मन्दिर, मथुरा के गौकर्ण मन्दिर में अश्लील भित्ति चित्त व मूर्तियाँ विराजमान हैं जिनका दर्शन कर क्या बच्चों महिलाओं पर सात्विक प्रभाव पड़ेगा?ऐसे ही अनेक मन्दिरों में आज भी मुर्गे-बकरे, शराब चढ़ाई जाती है। उज्जैन के प्रसिद्ध भैरव मन्दिर में शराब चढ़ाते स्वयं मैंने देखा है। शिव पुराण के अनुसार शिव लिंग पूजा वास्तव में शिव-पार्वती के गुप्तांगों की पूजा है। ये मन्दिर प्रतियोगिता-प्रदर्शन और चढ़ावा अर्जन के स्थल बन गये हैं न कि अध्यात्म व साधना के केन्द्र। सुतरां मन से श्रेष्ठ, एकांत, अध्यात्म स्थल अन्य कोई दूसरा नहीं हो सकता, इसी में चित्त को धारण कर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना होनी चाहिए। उन हिन्दू धर्मशास्त्रों पर कैसे विश्वास किया जा सकता है जो इतिहास को झुठला कर अपने को स्वत: प्रमाण, ईश्वरीय फल की संज्ञा देते हैं। महाभारत में कृष्ण का जीवन चरित्र अत्यंत पवित्र, तेजस्वी, मनस्वी, तपस्वी, यशस्वी दिखाया गया है। महाभारत का कृष्ण योगेश्वर है, नीतिनिपुण है, धर्मावतार है, एक पत्नीव्रत है, वर्षों तक पुत्र प्राप्ति के लिए वे और उनकी पत्नी रुकमणी संयम और ब्रह्मचर्य का जीवन जीते हैं। लेकिन इसी वन्दनीय भगवान् कृष्ण को भागवत पुराण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण, गोपाल सहस्रनाम में चौरजार शिखामणि तक का तमगा दिया गया है, कुब्जा दासी से सम्भोग, परिस्त्रियों से रासलीला करते दिखाया गया है। महाभारत और पुराणों के रचनाकार महर्षि वेदव्यास है अत: एक ही व्यक्ति कृष्ण के सदाचारी व दुराचारी रूप को साथ-साथ कैसे दिखा सकता है?

पौराणिक भाई सोचते कुछ हैं, बोलते कुछ हैं और करते कुछ हैं अर्थात् उनकी जीवनशैली विरोधाभासों से भरी पड़ी है। ऐसा जीवन जीने वालों की शास्त्रों में स्तुति नहीं निन्दा की गई है। इसका एक ही उदाहरण देना पर्याप्त होगा। सनातनी परिवारों में, मंदिरों में, सत्संगों में जो आरती बड़ी श्रद्धा से गाई जाती है वह है - ओ३म् जय जगदीश हरे।' इस आरती की एक पंक्ति है - 'तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति' अर्थात् हे ईश्वर। तुम एक ही सबके मालिक हो, तुम अगोचर हो अर्थात् तुम्हें इन्द्रियां नहीं देख सकती अर्थात् तुम निराकार हो, साकार नहीं, तुम सबके प्राणपति हो अर्थात् सबके प्राणों में बसते हो। यह इस आरती का तात्विक सत्य और तथ्य है लेकिन सनातनी जन इस सत्य व तथ्य से तब खिलवाड़ करते नजर आते हैं जब वे परमात्मा को एक नहीं विभिन्न देवी-देवताओं के रूप में भजने-पूजने लगते हैं, उसे विविध अवतारों का जामा पहना दिया जाता है, उसे निराकार से साकार बना दिया जाता है। उसे प्राणों में न मानकर मन्दिरों में ढूंढ़ा जाने लगता है, मूर्तियों में उसकी कल्पना की जाने लगती है। यजुर्वेद ऐसी मानसिकता पालने वाले को मनुष्य नहीं असुर मानता है -

असुर्या नाम लोकाऽअन्धेन तमसावृत:।
ताँस्ते प्रेत्यापिगच्छन्ति ये के चात्महनो जना:॥

यजु. 40/6

अर्थात् वे ही मनुष्य असुर, दैत्य, राक्षस, पिशाच आदि हैं जो आत्मा में कुछ, वाणी में कुछ, कर्म में कुछ हैं अर्थात् मनसा, वाचा, कर्मणा एक नहीं, अनेक हैं। जिनके मन, कर्म, वाणी में अन्तर है वे संशयग्रस्त प्राणी भवसागर से पार नहीं हो सकते। लोक-परलोक में सुख के भागी वे ही बनते हैं जिनकी आत्मा, वाणी, कर्म में निष्कपटता और एकरूपता रहती है।

यजुर्वेद का यह उपदेश भी इसी सन्दर्भ में विचारणीय है -

अन्धन्तम: प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायऽरता:॥

यजु. 40/12

अर्थात् जो अनुभूति अर्थात् कारण प्रकृति की, ब्रह्म के स्थान पर उपासना करते हैं वे अन्धकार में प्रवेश करते हैं। जो कार्य प्रकृति अर्थात् चेतन परमेश्वर के स्थान पर पृथ्वी, वृक्ष, पाषाण आदि जड़ की उपासना करते हैं वे उस अन्धकार से भी अधिक

दु:खदायी घोर नरक में गिरकर महा-क्लेश भोगते हैं। अत: आत्म तत्व की उन्नति के लिए श्रेष्ठ मार्ग यही है कि अनासक्त, सात्विक जीवन विवेक, अभ्यास, वैराग्य के साथ जीते हुए परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना, उपासना में लीन रहो।

मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठित करने का भ्रम

मूर्तिपूजा के प्रति जन-सामान्य का विश्वास बढ़ाने के लिए प्राय: यह भ्रम फैलाया जाता है कि मन्दिरों में स्थापित मूर्ति मात्र पाषाण या धातु की प्रतिमा नहीं होती बल्कि शास्त्रानुमोदित विधि से उपचार करके, मन्त्रोच्चारण से उसमें प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है अर्थात् देवी-देवता का आह्वान कर उसमें उसकी स्थापना की जाती है। ऐसी प्रतिमा ही मनोकामनाएं पूरी करने में समर्थ होती है। गत सवा सौ वर्षों में मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करने वाले मन्त्र न तो स्वामी दयानन्द वेदों में ढूँढ़ पाये और न ही आर्य समाज के सैकड़ों विद्वान्। स्वामी दयानन्द तो इसके विपरीत 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखते हैं कि मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करने वाले धर्माचार्य इन मन्त्रों से अपने मृत प्रिय जनों को पुनर्जीवित क्यों नहीं कर लेते?उनकी दृष्टि में यह कोरा ढोंग, पाखण्ड और अन्धविश्वास है। मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करने कराने की भला जरूरत भी क्या है क्योंकि ईश्वर तो सर्वव्यापक होने से पहले ही मूर्ति में विद्यमान है?लेकिन इससे मूर्ति जड़ ही रहेगी, चेतन नहीं होगी और न वह ईश्वर हो जायेगी क्योंकि समूचे जगत् में जैसे सभी जड़ पदार्थों में ईश्वर विद्यमान है और वे पदार्थ ईश्वर नहीं हो जाते वैसी ही स्थिति मूर्ति की रहती है। परमात्मा के चैतन्य गुण किसी चैत्य में ही आ सकते हैं अथवा घट सकते हैं न कि किसी अचेतन जड़ पदार्थ में। अत: मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करना या मानना केवल भ्रम है, अंधविश्वास है। दूसरे, दुर्जनतोष न्याय से यदि यह मान भी लिया जाये कि मन्त्रोच्चारण और अन्य क्रियाओं से मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा होती है, देवी-देवता साक्षात् उसमें विराजते हैं तो भी एक कमी रह जाती है कि भक्त तो मूर्ति में नहीं विराजते, वे तो बाहर ही रहते हैं, उससे पृथक ही, दूरी बनाकर रहते हैं, तब भक्त और भगवान का मिलन मूर्ति कैसे करायेगी?आत्मा तो मनुष्य के शरीर से बाहर निकल कर मूर्ति में नहीं घुस सकती। इस स्थिति में क्या प्राण-प्रतिष्ठा के मन्त्रों से आत्मा का प्रवेश भी मूर्ति में कराना जरूरी नहीं हो जाता?आत्मा सर्वव्यापक नहीं है एकदेशीय है अत: उसकी विद्यमानता मूर्ति में कैसे मान ली जाये?इस प्रसंग में एक रोचक घटना का उल्लेख करने का लोभ मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। आर्य समाज के मूर्धन्य हस्ताक्षर एवं दार्शनिक मनीषी पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एक बार अपने प्रवचन में निराकार परमात्मा की सर्व व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए मूर्तिपूजा का खण्डन कर रहे थे। इसी बीच एक सनातनी श्रोता ने खड़े होकर प्रश्न कर डाला-

तुम वेद के ठेकेदारों से है यह मेरा सवाल
कण-कण में खुदा है तो मूर्ति में क्यों नहीं?

उपाध्याय जी ने उस श्रोता से पूछा कि तुम्हारे प्रश्न का उत्तर गद्य में दूं या पद्य में। श्रोता बोला कि जवाब पद्य में ही दें तो मज़ा इसी में आयेगा। तब उपाध्याय जी ने जो उत्तर दिया वह इस प्रकार था -

तुम पुराण के ठेकेदारों को है यह मेरा जवाब,
मूर्ति में खुदा तो है पर तुम तो उसमें हो नहीं।

वस्तुत: सर्वव्यापक होने से ईश्वर सर्वत्र है, पत्थरों में, वृक्षों में, नदियों में, सरोवरों में, तीर्थों में, मूर्तियों में लेकिन उसकी आराधना अर्थात् स्तुति, प्रार्थना, उपासना और उसका ध्यान तो आत्मा ने करना है जो शरीर के भीतर है। जब परमात्मा सर्वव्यापी होने से हमारे भीतर ही विद्यमान है तो आत्मा का उससे मिलन भीतर ही सम्भाय है, बाहर नहीं। **नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुणा** - कठोपनिषद् (2.3.12) के अनुसार परमात्मा को वाणी, मन व नेत्रों से प्राप्त नहीं किया जा सकता। जब मूर्ति में परमात्मा के होने का प्रसंग उपस्थित होता था तो आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी बड़ी सरलता से अपने श्रोताओं को समझाते थे कि हम ईश्वर को मूर्ति के भीतर व बाहर स्वीकार करते हैं क्योंकि वह सर्वव्यापक है। हम मूर्ति का खण्डन नहीं करते वरंच मूर्ति पूजा का खण्डन करते हैं। कारण, जब ईश्वर सर्वत्र है तो आप मूर्ति के भीतर वाले ईश्वर को ही क्यों पूजना चाहते हैं, बाहर वाले ईश्वर को क्यों नहीं?दूसरे, यदि भीतर वाले ईश्वर को ही पूजना उचित है, अधिक लाभकारी है तो मूर्ति वाले ईश्वर से अधिक निकट तो वह ईश्वर हो जो हमारे भीतर, हमारी आत्मा में विद्यमान है उसे क्यों न पूजा जाये?इस अन्तर्यामी परमात्मा तक हमारी पहुंच अधिक सरल, सुगम व सार्थक होगी। आत्मा और परमात्मा के बीच केवल ज्ञान की दूरी है, समझ का फर्क है, भ्रम की स्थिति है जिसके दूर होते ही दोनों के बीच की दूरी खत्म हो जाती है। अत: मूर्तिपूजा की अपेक्षा अन्तर्साधना अधिक प्रामाणिक, अधिक तार्किक, अधिक व्यावहारिक और अधिक फलदायी है। इससे वह आडम्बर, पाखण्ड, अन्धविश्वास नहीं फैलता जिसने अध्यात्म को बाजारी और बिकाऊ बना दिया है, प्रदर्शन और प्रतियोगिता का आधार बना दिया है, चढ़ावे और कामना पूर्ति का सौदा बना दिया है, वाद और विवाद का मसला बना दिया है, वेदों, उपनिषदों, दर्शनों के यथार्थ स्वरूप को ढक दिया है और भारत की प्राचीन छवि, सभ्यता, संस्कृति को नकार दिया है। इसी कारण से ऋषिवर दयानन्द ने पुणे के तेरहवें प्रवचन में कहा था कि वेदों में कहीं भी मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा का विधान नहीं है। मूर्ति-पूजा जैनियों से चली और पुराणों में इसका वर्णन है। मूर्तिपूजा निन्दनीय है और यह मात्र व्यावसायिक बन गई है। पन्द्रहवें प्रवचन में मूर्तिपूजा को दुराचार की संज्ञा देते हुए उन्होंने अपनी यह इच्छा प्रकट की कि देशवासी वेदों की ओर लौट कर आर्यावर्त के पुनरुद्धार का बीड़ा अवश्य उठायेंगे।

सनातन धर्म के आचार्य जितना जोर पुराणों पर देते हैं, गीता रामायण पर देते हैं उतना वेदों पर, उपनिषदों पर, दर्शनों पर, मनु-स्मृति आदि वैदिक वाङ्मय पर नहीं देते। कारण, यदि ऐसा हो जाये तो मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद, तीर्थाटन, श्राद्ध-तर्पण, कुम्भ स्नान, कांवड़ यात्रा आदि मिथ्याचारों की पोल स्वत: खुल जायेगी, उनके शास्त्रीय पक्ष की निस्सारता जग-जाहिर हो जायेगी, उनका ऐतिहासिक पक्ष एक कमजोरी के रूप में उभर कर सामने आयेगा, उनका व्यावहारिक पक्ष अनौचित्य पूर्ण सिद्ध होने लगेगा। महर्षि दयानन्द, उनके आर्य समाज और इसके सैंकड़ों विद्वानों ने शास्त्रार्थ, प्रवचनों, पारस्परिक संवादों, गोष्ठियों, वेद-सप्ताहों, पुस्तकों के माध्यम से वेद का संदेश घर-घर तक पहुंचाने का अथक प्रयास गत सवा सौ वर्ष में किया लेकिन सफलता नहीं मिली। कारण, सनातन धर्म का ढांचा और ताना-बाना कुछ ऐसा है कि एक आम हिन्दू की मानसिकता समर्थक और विरोधी को एक साथ खपाने की बन गई है। विष और अमृत दोनों को एक साथ हजम करने की उनकी सामर्थ्य विलक्षण है। यही कारण है कि सनातन धर्म के पक्ष में या विपक्ष में खड़े होने वाले दोनों ही यहाँ स्वीकार्य हो जाते हैं अथवा विरुद्ध पक्ष को एक अलग सम्प्रदाय बनाने को बाध्य कर दिया जाता है जिससे सनातन धर्म का मूल ढांचा सुरक्षित रह जाता है। कबीर और नानक सामने आये तो सनातन धर्म का कुछ नहीं बिगाड़ पाये और दोनों दो अलग-अलग सम्प्रदायों के रूप में सिमट कर रह गये। यह सिमटना पथ से भटकना है, मिशन से भटकना है, लक्ष्य से भटकना है, आर्य समाज में भी आज ऐसे तत्व सक्रिय हैं जो इसकी वेदी से पाखण्ड का खण्डन नहीं होने देते।

स्वामी अग्निवेश ने अमरनाथ यात्रा के सम्बन्ध में जो कहा वह वेदानुकूल था, ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के मिशन के अनुकूल था लेकिन जब समूचा सनातन धर्म उनके विरोध में आ खड़ा हुआ तो आर्य समाज ने सड़क पर उतर कर स्वामी जी का समर्थन करने का साहस नहीं बटोरा। यह दुर्बलता इस कारण पैदा हुई है कि आर्य समाज ने भी सम्प्रदाय का स्वरूप ग्रहण कर लिया है और उसमें भी अनेक धड़ेबन्दी बन चुकी हैं जो मिशन को खाक कर दे रही हैं। शिरड़ी के साईं बाबा को लेकर शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी ने जो अभियान चलाया उसमें आज वे अकेले पड़ गये हैं, बैकफुट पर आ गये हैं क्योंकि दूसरे शंकराचार्य बजाय उनके समर्थन में उतरने के मौन साध गये हैं। साईं के भक्तों ने जब अपना मोर्चा खोला और पाखण्ड का जूता पाखण्ड पर चलाया तो अनेक सनातनी संगठनों व सम्प्रदायों ने साईं को अवतार मानने की घोषणा करदी, शिरडी परिवार को सिद्ध पीठ और साईं को हिन्दू मानना शुरू कर दिया और खुलकर समाहित करने की सनातनी परम्परा की दुहाई देकर शंकराचार्य स्वरूपानन्द जी का विरोध करना शुरू कर दिया उनकी सर्वोच्चता को चैलेंज देते हुए नकार दिया। अब बड़ोदरा की अदालत से उनके नाम समन जारी हो गये हैं जैसे अग्निवेश को हुए थे क्योंकि यह मामला भी आस्था को आहत करने का बन चुका है। दूसरी ओर बलसाड के बरुमाल धाम के प्राचीन शिव मन्दिर से साईं की प्रतिमा हटाये जाने की प्रक्रिया जारी है। जब कोई मिशन सनातन धर्म के मुकाबले में या विरोध में उतरता है तो सनातन धर्म के कुछ सम्प्रदाय उसके समर्थन में तो कुछ विरोध में उतर आते हैं और धीरे-धीरे प्रतियोगी या विरोधी मिशन की हवा निकालने लगते हैं और इसी बीच उसमें कारगर घुसपैठ करके उसकी मूल व आन्तरिक शक्ति का क्षरण भी कर दिया जाता है। आर्य समाज में संघी तत्वों की घुसपैठ से इसी खेल को अंजाम दिया जा रहा है जो मूल रूप से सनातनी हैं और दिखावा आर्य समाजी होने का करते हैं।

देश को आज किसी नये कबीर की, किसी नये नानक की, किसी नये दयानन्द की जरूरत है जो सम्प्रदाय से ऊपर उठकर वेद का संदेश गुंजा सके। कोई भी देश और समाज पाखण्ड, आडम्बर, अन्धविश्वास के बल पर उन्नति नहीं कर सकता और न ही सुरक्षित रह सकता है। भारत की दासता का इतिहास इसका साक्षी है। जो कौम अपने इतिहास से सबक नहीं लेती वह बार-बार धोखा व मार खाती है। आस्था, श्रद्धा और विश्वास की जो नयी-नयी परिभाषाएं गढ़ी जा रही हैं वह पाखण्ड को खत्म नहीं, पोषित और पल्लवित कर रही हैं। मूर्तिपूजा के मूल में जो भूल है उसे यदि सुधारा नहीं गया तो भारत की अपनी मूल छवि, अपना मूल तेज, अपनी मूल गरिमा, अपना मूल दर्शन, अपनी मूल शक्ति नाम शेष होकर रह जायेगी। इस आसन्न खतरे को आज कितने लोग समझ रहे हैं अथवा कितने लोग सम्प्रदाय व पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर, नीर-क्षीर विवेक से इसे समझना व नष्ट करना चाहते हैं?इस यक्ष प्रश्न का उत्तर ही भारत का भविष्य तय करेगा। इस प्रश्न का उत्तर कोटिश: जनता ने देना है संसद या अदालतों ने नहीं।

वाई-454 / 455 कैम्प नं.-1
सुलतानपुरी मार्ग, नांगलोई, दिल्ली-110041
मो.:-9891110040

thearyasamaj.org

उत्तर प्रदेश में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत

गुरुकुल इण्टरनेशनल स्कूल जिवाना, जिला-बागपत के प्रांगण में

बड़ौत एवं क्षेत्र की अनेकों आर्य समाजों द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का 22 सितम्बर, 2014 को गुरुकुल इण्टरनेशनल स्कूल, जिवाना, जिला-बागपत के प्रांगण में भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध आर्यनेता प्रो. बलजीत सिंह आर्य जी के नेतृत्व में बड़ौत से जिवाना तक सैकड़ों मोटरसाईकिलों ओ३म् ध्वंजों से सजे वाहनों तथा सैकड़ों व्यक्तियों के साथ स्वामी जी को जिवाना लाया गया। सारे रास्ते को स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज के नारों से गुंजायमान किया गया। स्वामी जी के सार्वदेशिक सभा के प्रधान चुने जाने पर प्रो. बलजीत सिंह आर्य ने बागपत तथा बड़ौत क्षेत्र की अनेकों आर्य समाजों, आर्यवीर दल एवं आर्य युवक परिषदों की ओर से भव्य स्वागत का कार्यक्रम आयाजित किया था। इस अवसर पर बागपत एवं मेरठ जिले के प्रमुख आर्य समाजी कार्यकर्ताओं, शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाध्यापकों एवं प्राध्यापकों, समाजों के अधिकारियों के अतिरिक्त पूर्व विधायक प्रो. महक सिंह, पूर्व विधायक डॉ. अजय सिंह, श्री हुसनपाल मलिक सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुरुकुल गौतम नगर के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने की तथा मंच संचालन श्री विक्रम सिंह आर्य आदर्श नगला ने अत्यन्त कुशलता से किया। स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत करने वालों में मुख्य रूप से डॉ. अनिल कुमार आर्य प्रबन्धक गुरुकुल इण्टरनेशनल स्कूल, श्री मनीष कुमार, श्री सत्यवीर सिंह फौजी प्रधान ग्राम पंचायत सिरसिली, श्री विजय सिंह आर्य टीकरी, श्री धर्मपाल आर्य आदि ने स्वामी जी का शॉल ओढ़ाकर तथा माल्यार्पण के द्वारा स्वागत किया।

इस अवसर पर उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने आर्य समाज की विचारधारा को वर्तमान में सबसे अधिक प्रासंगिक बताया और इसके प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। स्वामी जी ने बागपत जिले में सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जन-जागरण करने हेतु निकट भविष्य में एक प्रचार यात्रा निकालने का प्रस्ताव रखा जिसे समस्त आर्यजनों ने सहज स्वीकार कर प्रो. बलजीत सिंह के नेतृत्व में यात्रा निकालने का

निर्णय लिया। स्वामी जी ने नशाखोरी एवं संस्कार विहीनता के प्रति चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि देश की रीढ़ युवा होते हैं, युवाओं को सही दिशा देनी होगी और उन्हें नशे जैसी भयंकर आदत से बचाना होगा। स्वामी जी ने कहा कि विभिन्न स्थानों पर जहाँ आर्य समाजें नहीं हैं वहीं नवीन आर्य समाजों की स्थापना कर पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास तथा नशाखोरी के विरुद्ध मोर्चा खोलना आप सबके प्राथमिक कार्य में होना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अधिक से अधिक युवाओं को महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से परिचित करायें और जन-सम्पर्क अभियान को पूरी ताकत के साथ प्रारम्भ करें तथा आर्य समाज में नये रक्त का संचार करें। स्वामी जी ने कहा कि जबसे मैंने प्रधान पद संभाला है इस क्षेत्र में ये मेरा पहला कार्यक्रम है। और आप सबके उत्साह तथा भारी संख्या को देखकर आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य के बनने की संभावना दृष्टिगोचर हो रही है। स्वामी जी ने आर्यों से अपील की कि आप सब पूर्ण निष्ठा एवं परिश्रम से आर्य समाज के कार्यों को गति प्रदान करें तथा आर्य समाज को प्रगति पथ पर अग्रसर करने के लिए अपना पूर्ण सहयोग हमें प्रदान करें। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने आर्यजनों को आर्य समाज के प्रचार-प्रसार करने के कार्य में जुड़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी के सशक्त नेतृत्व में आर्य समाज नई शक्ति के रूप में उभरेगा। उन्होंने नई आर्य समाजों को स्थापित करने पर बल दिया। बागपत जिले में प्रत्येक गाँव में आर्यवीर दल एवं स्त्री-पुरुषों के आर्य समाज विधिवत चलाये जायें। उन्होंने कहा कि लोगों को पतन के रास्ते से बचाकर सदाचार एवं धर्म के रास्ते पर लाने का विशेष प्रयास किया जाना चाहिए। इससे पूर्व बड़ौत से बागपत तक स्वामी जी की यात्रा के समय अनेकों विद्यालयों के छात्रों एवं अध्यापकों ने स्वामी जी के काफिले का पुष्प वर्षा तथा माल्यार्पण द्वारा भव्य स्वागत किया। पंक्तिबद्ध होकर विद्यार्थी स्वामी जी के स्वागत के लिए उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रो. महक सिंह, डॉ. अजय सिंह, श्री बलजीत सिंह आदि ने भी अपने विचार प्रकट किये।

दयानन्द मठ चम्बा में दुर्लभ एवं अभूतपूर्व शारद यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव

हजारों आर्यजनों की उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न

हिमाचल प्रदेश के सुन्दर पर्वतों की उपत्यका में रावी नदी के तट पर अनुपम दयानन्द मठ चम्बा स्थापित है। जिसके वर्तमान में अध्यक्ष पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी है। यज्ञों के प्रति अर्पित, यज्ञों के लिए समर्पित, यज्ञों में अत्यधिक आस्थावान, यज्ञमय जीवन जीने वाले पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के सान्निध्य में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द मठ, चम्बा (हि. प्र.) में संचालित विद्यालय का वार्षिकोत्सव दिनांक 21 से 24 सितम्बर, 2014 तक धूमधाम से हजारों विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में मनाया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने अपने ज्ञान कौशल, व्यायाम और विभिन्न शारीरिक कलाओं का उत्तम प्रदर्शन किया। लगातार चार दिन तक छात्र-छात्राओं के विभिन्न कार्यक्रमों के साथ ही शिक्षा व सदाचार पर भजनों और व्याख्यानों का क्रम भी चलता रहा।

दिनांक 25 सितम्बर को सुबह 6.30 बजे शारदीय यज्ञ ऋग्वेद के मन्त्रों से आरम्भ हुआ जो 24 घण्टे तक निर्विघ्न लगातार दिन-रात चला। यह यज्ञ ऋग्वेद मण्डल-7 के सूक्त 66 के मन्त्र 11 के अनुपालन में किया जाता है जो भारत में अन्य किसी स्थान पर नहीं होता। मन्त्र में उपदेश है कि इस यज्ञ के करने से राष्ट्र की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक उन्नति में वृद्धि होती है।

पंजाब, हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली के गणमान्य परिवार अत्यन्त श्रद्धा के साथ इस भव्य कार्यक्रम में चम्बा पहुँचते हैं। राष्ट्र में वीरता एवं पौरुष को राष्ट्रीय शक्तियों में पैदा करने के संकल्प के साथ इस विशिष्ट यज्ञ के प्रति अप्रतिम श्रद्धा है स्वामी सुमेधानन्द जी में। विशेष व्यवस्थाओं के साथ उत्तम कोटि की विशिष्ट सामग्री तथा आवश्यक वस्तुओं की पुष्कल मात्रा में आहुतियाँ दिलवाते हैं स्वामी जी। उनका मानना है कि जितने मनोयोग से यज्ञ करेंगे उसके फल व्यक्तिगत जीवन एवं सामाजिक जीवन में निश्चित रूप में मिलेंगे। स्वामी सुमेधानन्द जी एक तपोनिष्ठ एवं वीतराग संन्यासी हैं जो हिमाचल एवं पंजाब में वैदिक धर्म की दुन्दुभी बजा रहे हैं। उन्होंने पूरे राष्ट्र को सही दिशा देने का कार्य किया है। उनका संकल्प है कि आर्यों में एकबार फिर राज्य शक्ति प्राप्त करने के लिए तैयार करेंगे जिससे वैदिक सिद्धान्तों को क्रियान्वित किया जा सके। इस अवसर पर जहाँ अनेकों गणमान्य महानुभाव, संन्यासी, विद्वान दयानन्द मठ चम्बा के पुराने स्नातक एकत्रित होते हैं वहीं सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी निरन्तर 5 वर्षों से स्वामी जी के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान होने के कारण साथियों के साथ पहुँचते हैं। यह एक अद्भुत कार्यक्रम है। इस अवसर पर स्वामी जी के 75 वर्ष पूरे होने पर 3 मई, 2015 को हीरक जयन्ती मनाने का भी निश्चय किया गया है। जिसकी योजना शीघ्र ही तैयार की जायेगी।

इस शारदीय यज्ञ का आयोजन स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में गत 14 वर्षों से प्रतिवर्ष किया जाता है। इस वर्ष 15वाँ शारदीय यज्ञ हर्षोल्लास व आनन्दमय वातावरण में स्वामी जी के ब्रह्मत्व, आचार्य महावीर जी के दिशा-निर्देशन और आचार्य ऋषि कुमार के सुप्रबन्धन तथा छात्र-छात्राओं, शिक्षक-शिक्षिकाओं और मठ के अन्य कर्मचारियों और पारिवारिक सदस्यों के सतत् सहयोग से निर्विघ्न सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

यज्ञ की अवधि में ही स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली व स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, व्यवस्थापक सभा कार्यालय के आध्यात्मिक, सामाजिक, शैक्षिक और नैतिक विषयों पर सारगर्भित प्रभावशाली प्रवचन समय-समय पर होते रहे।

यज्ञ में अपार जन-समूह के साथ ही विद्यालय के शिशु, बालक व बालिकाओं ने भी उत्साह पूर्वक यज्ञ की सम्पूर्ण अवधि में उपस्थित रहकर अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया और यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ की अवधि में स्वल्पाहार, भोजन व चाय आदि का प्रबन्ध सराहनीय रहा। यज्ञ की समाप्ती पर आर्य संन्यासियों, विद्वानों और भजनोपदेशकों को यथा सम्भव मानदेय प्रदान कर विदा किया गया।

- आचार्य महावीर आर्य, अधिष्ठाता, दयानन्द मठ, चम्बा (हिमाचल प्रदेश)

thearyasamaj.org

राजस्थान में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का भव्य स्वागत

आर्य समाज एवं आर्य वीर दल (जालौर एवं जोधपुर) द्वारा किया गया कार्यक्रमों का आयोजन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी 27 सितम्बर, 2014 को दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा अपने प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत जोधपुर पहुँचे। उनके साथ उनके विशिष्ट सहयोगी ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य तथा श्री बिरजानन्द भी थे। जोधपुर हवाई अड्डे पर पहुंचने पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व कार्यकारी प्रधान श्री राम सिंह आर्य जी के नेतृत्व में

सैकड़ों आर्य वीरों ने स्वामी जी का स्वागत किया। हवाई अड्डे का सारा परिसर महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की जय-जयकार से गूंज उठा। स्वामी आर्यवेश जी को फूल-मालाओं से लाद दिया गया। बहुत बड़े जुलूस के रूप में स्वामी जी को हवाई अड्डे से बाहर लाया गया जहाँ एक भव्य प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन किया गया जिसको सभी पत्र-पत्रिकाओं एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। हवाई अड्डे पर स्वागत करने वालों में आर्य वीर दल समिति के राष्ट्रीय संयोजक श्री भंवर लाल आर्य, आर्यवीर दल जोधपुर के संचालक श्री हरिसिंह आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री गजे सिंह आर्य, श्री सोहन लाल आर्य, श्री महेश आर्य, श्री बिरजानन्द, आचार्य सन्तराम आदि मुख्य रूप से शामिल थे। प्रेस कांफ्रेंस में स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक विचारधारा व आर्य समाज के सिद्धान्तों की वर्तमान परिस्थितियों में उपादेयता तथा स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज के योगदान के बारे में जानकारी दी। उन्होंने वेदों को जीवन का आधार बताते हुए वैदिक विचारधारा का अनुसरण करने तथा उनसे जुड़कर सामाजिक कुरीतियों को मिटाने का आह्वान किया। उन्होंने शिक्षा के व्यवसायिकरण के प्रयासों को देश के लिए दु:खद बताया। स्वामी जी ने आधुनिकता के बढ़ते प्रभाव से बच्चों में घटते संस्कार व बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति पर भी चिन्ता व्यक्त की। प्रेस कांफ्रेंस में नशामुक्त भारत का सपना, गोमांस का निर्यात तथा बूचड़खानों को बन्द करने, जातिवाद से मुक्त समाज, साम्प्रदायिकता का समूल नाश, भ्रष्टाचार मिटाने के विशेष प्रयास, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड को मिटाना, महिला उत्पीड़न पर लगे अंकुश और शोषणमुक्त समाज से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत किये।

भोजन के उपरान्त 4 गाड़ियों तथा अनेकों मोटरसाईकिलों के काफिले के साथ स्वामी जी को जालौर ले जाने के लिए श्री रामसिंह, श्री बिरजानन्द, श्री भंवर लाल आर्य, हरि सिंह आर्य, श्री अजीत सिंह, श्री शिव कुमार सोनी, आचार्य सन्तराम तथा ब्र. दीक्षेन्द्र जी सहित सैकड़ों कार्यकर्ता साथ चल रहे थे। जालौर में आर्य समाज के प्रधान ऑल इंडिया बॉक्सिंग एसोसिएशन के नव-निर्वाचित उपाध्यक्ष श्री दलपत सिंह आर्य के नेतृत्व में सैकड़ों मोटरसाइकिलों तथा वाहनों के काफिले के साथ एक खुली गाड़ी में श्री राम सिंह आर्य, श्री बिरजानन्द, आचार्य सन्तराम आर्य तथा स्वामी जी को नगर के विभिन्न बाजारों में जुलूस के रूप में ले जाया गया। जहाँ विभिन्न स्थानों पर पुष्प वर्षा, जलपान तथा माल्यार्पण से स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया। मुख्य कार्यक्रम बीरमदेव व्यायामशाला में आयोजित किया गया था। जहाँ सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के जालौर आगमन पर अभिनन्दन समारोह व राष्ट्रीय चिन्तन विषय पर कार्यक्रम तथा विशाल जनसभा का आयोजन किया गया था। बीरमदेव तथा भामाशाहों की भूमि जालौर अपने आपमें एक गौरवपूर्ण इतिहास को संजोये हुए है

और यहाँ के लोग धार्मिक विचारों से विशेष रूप से ओत-प्रोत हैं। आर्यवीर दल जालौर नगर पर अपना एक प्रभावशाली बर्चस्व रखता है तथा समस्त गतिविधियों में आर्यवीर दल का विशेष प्रभाव रहता है।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने सवा घण्टे के प्रवचन में धारा प्रवाह तथा ओजस्वी उद्बोधन प्रदान किया। स्वामी जी ने वैदिक विचारधारा व आर्य समाज के सिद्धान्तों की वर्तमान परिस्थितियों में उपादेयता तथा स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज के योगदान की विस्तृत जानकारी प्रदान की। स्वामी जी ने कहा कि देश को आजाद करने से लेकर अनेकों क्षेत्रों में वर्तमान तक पहुँचाने में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही है। देश के नेता तथा प्रधानमंत्री तक आर्य समाज से सीधे प्रभावित रहे हैं। स्वामी जी ने वेदों को जीवन का आधार बताते हुए वैदिक विचारधाराओं का अनुसरण करने तथा उनसे जुड़कर सामाजिक कुरीतियों को मिटाने का आह्वान किया। उन्होंने शिक्षा के व्यवसायीकरण के प्रयासों को देश के लिए दु:खद बताया। स्वामी जी ने कहा कि भारत को फिर से प्राचीन गौरव दिलाने व फिर से विश्व गुरु बनाने के लिए देश में व्याप्त भ्रष्टाचार व सामाजिक कुरीतियों को जड़ से मिटाना होगा। उन्होंने बताया कि इसके लिए आर्य समाज की ओर से विभिन्न संगठनों के साथ सप्तक्रांति को लेकर अभियान चलाया जा रहा है तथा सामाजिक जागरूकता के लिए विशेष कार्य किये जा रहे हैं। स्वामी जी ने शराब तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, धार्मिक पाखण्ड सहित अनेकों मुद्दों पर आम जनता को संगठित करने के प्रयास पर बल दिया। इस अवसर पर श्री रामसिंह आर्य ने अपने ओजस्वी विचारों से जन-समूह को यह एहसास कराया कि आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के विचारों से ओत-प्रोत होकर ही देश की समस्याओं से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

इस अवसर पर श्री बिरजानन्द जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि अपने आपको जीवन्त और प्राणवान बनाने के लिए संघर्ष की आवश्यकता होती है और आन्दोलनों के द्वारा ही जन-जागृति समाज में फैलाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि महर्षि के दिखाये मार्ग को पूरी निष्ठा से अनुसरण करना होगा तथा मूर्ति पूजा, अन्धविश्वास सहित देश में व्याप्त बुराईयों से देश को मुक्त कराने के लिए गाँव-गाँव में प्रचार-प्रसार के लिए कमर कसनी होगी।

इस अवसर पर केवन शाह गाजी के खादिम अकरम बाबा, कर्मचारी नेता ईश्वर लाल शर्मा, नगर परिषद् के उपाध्यक्ष ईश्वर मेहता, भारत विकास परिषद् के अध्यक्ष पद्माराम चौधरी, पार्षद महेन्द्र अग्रवाल, एडवोकेट सरदार रणखोसर, जालौर महोत्सव के सह-संयोजक मानवेन्द्र सिंह राजपुरोहित, श्री अवधेश सिंह, श्री अजीत सिंह जोधपुर, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री हरि सिंह आर्य,

श्री भंवर लाल आर्य-जोधपुर, श्री गोपाल जी-जिला आर. एस. एस. के प्रचारक, श्री मदन सिंह, श्री शिवसिंह जैनी, श्री गोपाल सिंह आदि ने स्वामी जी तथा अतिथियों का शॉल भेंटकर तथा माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

thearyasamaj.org

आर्य शिरोमणि बेगराज आर्य भजनोपदेशक के प्रति एक श्रद्धांजली

"संगीत सम्राट के अन्तिम दर्शन"

– वेदानन्द आर्य

वैदिक संगीत के पुरोधा अपने जीवन शतक पर पहुँचने ही वाले थे, अकस्मात् विधि का बज्रपात हो गया। वह आर्य समाज के जिस किसी भी आयोजन में सम्मिलित होकर अपना मनोहर प्रेरणादायी कार्यक्रम प्रस्तुत करते थे वहीं पर वैदिक संगीत के मंगलकारी सुमधुर स्वर झंकृत हो उठते थे और श्रोतागण संगीत की सरिता में डुबकी लगाते हुए भाव विभोर होने लगते थे। सैकड़ों लोग इन अवसरों से लाभ उठाने के लिए सदैव लालायित रहते थे। उनके इस प्रेरणादायी संगीत से जहां मानसिक संतुष्टि होकर हृदय को सुखद अनुभूति होती थी वहीं आध्यात्मिक पिपासा भी शान्त होती थी। इसीलिए आर्य जनता की अभिलाषा थी कि उनके संगीत का यह मंगलकारी क्रम अनवरत रूप से अभी चलते रहना चाहिए। क्योंकि उनकी जिज्ञासा अभी अपूर्ण व अतृप्त ही प्रतीत होती थी?किसी को किचिन्मात्र भी यह आशंका न थी कि इस मधुर स्वप्न की कड़ी का विच्छेदन भी हो सकता है। तभी तो उनके अभिनन्दन के सुअवसर पर अनेक संन्यासियों, मनीषियों व उनके अनेक सुहृदयी जनों ने शरद शतम् की कामना के साथ ईश्वर से उनके दीर्घ जीवन की प्रार्थना की थी। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि विधाता की इसे स्वीकृति प्राप्त न थी।

7 अगस्त, 2014 को प्रात: मैं ध्यान से उठा ही था कि अचानक एक दुखद सूचना प्राप्त हुई कि बेगराज जी नहीं रहे। इस दुखद सूचना से मर्मांतक पीड़ा हुई, क्योंकि उनका हमारे हृदय में निवास था?मैंने तुरन्त ही आदरणीय स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी को सूचित किया, स्वामी जी भी आवाक रह गये। स्वामी जी से वह बहुत आत्मीयता रखते थे। केवल तीन या चार मास से भी कम समय से वह प्रचार कार्य में असमर्थता अनुभव करते हुए घर पर ही विश्राम कर रहे थे। मेरा तथा स्वामी जी का अनेक बार उनके यहां जाकर उनकी कुशलक्षेम जानने का कार्यक्रम भी बना लेकिन इस जीवन की भागदौड़ व हाय मरी ने हमें इस सौभाग्य से भी वंचित ही रख दिया। हम दोनों ही व्यथित होकर रह गये। हम दोनों ने ही भूड़िया पहुँच कर संगीत की उस महान विभूति के अन्तिम दर्शन किये जिसे मंचासीन देखकर सैकड़ों लोगों के हृदय उल्लासित हो उठते थे। वह सम्मान प्रिय व्यक्ति थे, मेरे उनसे पारिवारिक सम्बन्ध थे। यह दुर्भाग्य ही था कि 46 वर्ष में यह प्रथम अवसर था कि 3-4 मास से उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त न हो सका था वरना किसी न किसी बहाने उनसे भेंट होती रहती थी।

आकर्षक व्यक्तित्व उन्नत ललाट, गोलाई लिये चमकता चेहरा, उस पर कुर्त्ता धोती व साफे की भारतीय वेषभूषा देखते ही बनती थी। सरलता व सादगी तथा सर्वथा मुस्कान उनकी पहचान थी।

दूसरों को सम्मान देकर उन्हें उत्प्रेरित कर स्वयं को इससे पृथक रखना उनकी आदत बन गई थी। वह प्रख्यात भजनोपदेशक ही नहीं प्रत्युत एक स्पष्ट और निर्भीक वक्ता भी थे। जब कभी वह प्रचार के समय प्राचीन कथानकों को आधार बनाकर सामाजिक कुरीतियों व दुर्व्यसनों पर प्रहार करते थे तो अनेक लोग संकल्पित होकर उस पर अमल प्रारम्भ कर देते थे। राजनीति पर उनके सुलझे हुए विचार तथा अवसरवादी एवं तुष्टीकरण की राजनीति के विरुद्ध उनके तर्क बड़े-बड़े दिग्गज राजनैतिकों को विचारने को बाध्य कर देते थे। यहाँ ध्यान योग्य बात यह भी है कि किसी आयोजन के किसी भी अवसर पर वह आर्यत्व से समझौता नहीं करते थे। यह उनकी विशेषता थी। चौ. चरणसिंह व चौ. देवीलाल सदृश देश के अनेक शीर्षस्थ नेताओं के दरबार में बेगराज जी की प्रत्येक बात को सम्मान दिया जाता था। प्रसिद्ध वाग्मी नेता पं. प्रकाशवीर जी शास्त्री जी तो बेगराज जी को अपना अनुज ही स्वीकारते थे। भूड़िया में एक साधारण परिवार में जन्में बेगराज जी का कार्यक्षेत्र एक दो जनपद अथवा एक दो प्रदेश नहीं अपितु समस्त भारतदेश और उससे भी कहीं बाहर मॉरिशस तक में उनकी धूम मच चुकी थी। बड़े-बड़े उपदेशक, शास्त्रार्थ महारथी ख्याति प्राप्त आर्य नेता उनकी वाणी का लोहा मानते थे। उनकी बाणी पर सरस्वती का वास था। विश्वास नहीं होता कि बेगराज जी नहीं रहे। इस प्रकार की अनेक पीड़ा दायक घटनाओं का अवलोकन कर विचारने को विवश होना पड़ता है कि विधाता के यहां ऐसी आत्माओं के लिए अधिक स्थान सुरक्षित है।

अत्यन्त संक्षिप्त रूप से बेगराज जी की प्रचार शैली पर विचार करके देखिये। आर्य समाज के उत्सवों, कथाओं तथा आर्य महासम्मेलनों में उनके द्वारा आर्य जनता को राष्ट्र भक्ति व प्रभु भक्ति का रसास्वादन कराया जाता था। अनेक अवसरों पर जब वह रामायण के व्यवहारिक धरातल पर बोलते थे तो श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते थे। कभी उनके मुख से सिद्धान्तहीन, भद्दे अश्लील चुटकले सुनने को नहीं मिलते थे। जिस रस पर भी वह बोलते थे उसका प्रत्यक्ष चित्राकार दृष्टिगोचर होता था। आपको स्मरण होगा कि जब कभी वह राष्ट्र कवि हरिओम् पंवार की ये पंक्तियां सम्मेलनों में बोलते थे कि "जाने किस दिन लाल किला मर्दानी भाषा बोलेगा" तो श्रोता तड़प उठते थे। इस प्रकार उनका निरहंकार तथा संयमी जीवन सभी को प्रेरणा देता रहेगा। उनकी गायन शैली भी प्रेरणादायक तथा अद्वितीय थी। उनके प्रत्येक गीत में संगीत का जादू नजर आता था। सार्वदेशिक को चाहिए कि वह इस प्रकार के उपदेशक विद्यालयों की स्थापना पर विचार करें जिनमें पृथक से योग अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना से बेगराज सदृश वैदिक संगीत के पुरोधाओं के निर्माण में सहयोग प्राप्त हो सके। आर्य समाज की उनके प्रति यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

अन्त में हम अपने सभी साथियों, सहयोगियों तथा गुरुकुल परिवार की तरफ से संगीत के सरताज को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहना चाहेंगे कि उनके संगीत प्रेमियों की संख्या लाखों से भी उपर पहुँच गई है, कितने उतावले व श्रद्धास्पद होकर उनके कार्यक्रमों को सुन रही थी आर्य जनता। किसी शायर ने ठीक ही कहा है –

"जमाना बड़े शौक से सुन रहा था,
तुम ही सो गये दास्तां कहते-कहते।

– कुचेसर, रोड चौपला, हापुड़,
मो.:-9557225330

सावधान ! **सावधान !!** **सावधान !!!**

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'विना लाभ विना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

गोहत्या पर पूरे देश में पूर्ण रोक लगायी जाये एवं सारे बूचड़ खाने तुरन्त बन्द हों तथा अन्य पशुओं की हत्या पर भी प्रतिबन्ध लगाया जाये

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 10 अप्रैल, 1875 को आर्य समाज नाम के एक आन्दोलनकारी संगठन की स्थापना की थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सर्वप्रथम ''स्वराज्य'' का मूल मंत्र दिया जिससे प्रेरित होकर आर्य समाज के अनेक वीर वीरांगनाओं ने देश की आजादी के लिए हंसते-हंसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। आर्य समाज ने समाज में फैली कुरीतियों, पाखण्डों व अन्धविश्वासों का खण्डन किया और शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने के साथ-साथ स्त्रियों व दलितों को समान शिक्षा तथा वेदाध्ययन का अधिकार प्रदान किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अंग्रेजी सरकार से गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की प्रबल मांग की थी तथा गोवंश के महत्त्व को दर्शाने के लिए गोकरूणानिधि पुस्तक की रचना की थी इसलिए आर्य समाज गाय आदि सभी पशुओं की हत्या और उनके मांस के सेवन का प्रबल विरोधी है। मूक, निर्दोष, अहिंसक व उपकारी पशुओं की अकारण एवं भोजन के लिए हत्या मानवीय संवेदनाओं के विरूद्ध एक जघन्य एवं क्रूरतापूर्ण दण्डनीय अपराध है। अत: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के आह्वान पर 21 सितम्बर, 2014 को अहिंसा महायज्ञ के रूप में मनाते हुए आर्य समाज मसूरी, जिला-देहरादून में आयोजित उत्तराखण्ड प्रदेश के कोने-कोने से आये आर्यों की यह सभा मांग करती है कि भारत सरकार हमारी निम्न मांगों पर तुरन्त निर्णय लेकर आवश्यक कानून बनायें :-

प्रस्ताव -1 गोहत्या पर पूरे देश में पूर्ण रोक लगायी जाये एवं सारे बूचड़ खाने तुरन्त बन्द हों तथा अन्य पशुओं की हत्या पर भी प्रतिबन्ध लगाया जाये। प्रस्ताव - 2 मांस के निर्यात पर पूर्णत: रोक लगायी जाये। प्रस्ताव - 3 धर्म के नाम पर हो रही गैरकानूनी पशु हत्या पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाकर उसे बन्द किया जाये।

इस मांग के साथ हम यह भी निवेदन करना चाहते हैं कि वैदिक विचारधारा के अनुसार गोरक्षा राष्ट्र रक्षा है और गो हत्या राष्ट्र हत्या है। गोरक्षा राष्ट्र की सुख व समृद्धि का भी आधार है। अत: गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर राष्ट्र की रक्षा की जाये। (यह प्रस्ताव महामहिम राष्ट्रपति जी के नाम से उत्तराखण्ड के राज्यपाल महोदय को दिया गया।)

-आर्य समाज मसूरी, जिला-देहरादून, उत्तराखण्ड

फरीदाबाद में नई आर्य समाज की स्थापना

14 सितम्बर, 2014 श्री सोहन लाल आर्य एवं उनके सुपुत्र श्री ओम प्रकाश आर्य ने आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद को नहर पाल खीरी रोड पर हनुमान नगर में 200 गज का प्लाट आर्य समाज हनुमान नगर के लिए दान दिया।

डॉ. अनिल आर्य इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आशीर्वाद देने पहुंचे। स्वामी श्रद्धानन्द जी का ओजस्वी प्रवचन हुआ, डॉ. गार राज सिंह आर्य ने कुशल संचालन किया। श्रीमती विमला ग्रोवर, श्री लक्ष्मी चन्द आर्य, श्री मकेन्द्र कुमार, श्री विरेन्द्र योगाचार्य, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, श्री मदन लाल तनेजा, श्री महेश चन्द्र गुप्ता आदि गणमान्य आर्य नेता उपस्थित थे। नई कार्यकारिणी का स्वागत किया गया। सभी को हार्दिक बधाई।

- डी के. भगत, प्रेस सचिव

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नैष्ठिक दीक्षा लेकर दो नवयुवकों ने किया आजीवन समाज सेवा का संकल्प

आज पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर भारतवर्ष भी अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, भाषा, संस्कार तथा आदर्श को भूलता जा रहा है, आज के नवयुवक-नवयुवतियाँ भी इसी रंग में रंगकर भेड़चाल में चलते जा रहे हैं। इसी दुर्दशा को देखते हुए पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने हरयाणा प्रान्त से आकर ओडिशा प्रान्त के एक अकालग्रस्त कालाहाण्डी (वर्तमान नुआपड़ा) जिले में गुरुकुल आश्रम आमसेना नामक बृहद् संस्था की स्थापना की। आज इस गुरुकुल से अन्य 18 संस्थाएं संचालित है।

स्वामी जी ने अपने प्रभाव से अनेक नवयुवकों को नैष्ठिक दीक्षा देकर देश, धर्म की रक्षा का संकल्प करवाया है तथा सभी नवयुवक स्वामी जी के निर्देशानुसार कार्य कर रहे हैं। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए गत 10 अगस्त को ब्र. राकेश कुमार आर्य तथा ब्र. प्रवीण आर्य (पुनीराम) ने श्रावण पूर्णिमा (रक्षाबन्धन) के दिन आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना सर्वस्व देश को सौंप दिया। इस गरिमामय कार्यक्रम में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, डॉ. कुंजदेव मनीषी एवं बहुत से विद्वान एवं अतिथिगण उपस्थित थे। अन्त में स्वामी धर्मानन्द जी ने दोनों ब्रह्मचारियों के इस साहसिक कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

- आचार्य रणजीत विवित्सु, मुख्याध्यापक, गुरुकुल आश्रम आमसेना, मो.:-9437070615

नारीत्व हुआ गौरवान्वित

हिण्डौन (राजस्थान) के आर्य समाज भवन में गत 18 अगस्त को द्वाद्वश ''कल्याणमल आर्य'' स्मृति कल्पना चावला पुरस्कार कोटा (राज.) की कुमारी सृष्टि गोयल को दिया गया। पुरस्कार के अन्तर्गत 5100/- रुपये की नकद राशि के साथ प्रशस्ति पत्र, संस्था का प्रतीक चिन्ह, शॉल एवं श्रीफल पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के महासचिव श्री अजय आर्य ने प्रदान किये।

समारोह को संबोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् (राजस्थान) के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' ने प्रकट किया कि यह कार्यक्रम तो पुनर्जागरण पुरोधा स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्देशित नारी उत्थान कार्यक्रम की बढ़ाने का ही प्रयास है। अन्य वक्ताओं में सर्वश्री गोकुल चन्द गोयल, डॉ. प्रमोद पाल, संजय गुप्त एवं प्रभाकर देव आर्य प्रमुख थे।

आर्य समाज, हिण्डौन के प्रधान शान्ति स्वरूप आर्य तथा रामबाबू आर्य ने समारोह के अध्यक्ष केदार जी एवं मुख्य अतिथि अशोक आर्य का सम्मान तथा सभी उपस्थितों का आभार प्रदर्शन किया।

- प्र. ईश्वर दयाल माथुर

आर्य जगत् के योगनिष्ठ संन्यासी, वैदिक विद्वान्, समर्पित व सरल व्यक्तित्व

पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के 75वें जन्मोत्सव पर राष्ट्रीय स्तर पर राजधानी दिल्ली में अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह

रविवार 16 नवम्बर, 2014, प्रातः 10 से 2 बजे तक

स्थान : योग निकेतन, रोड नं.-78, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

आर्य समाज के समस्त संन्यासी, विद्वान, नेता एवं पदाधिकारी इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी को शुभकामनायें प्रदान करेंगे तथा यथेष्ट सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र भेंट कर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे।

अपील : स्वामी दिव्यानन्द जी को सम्मान स्वरूप इस अवसर पर एक थैली भेंट की जायेगी जिसके लिए आप अपना सहयोग क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा **'स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति'** के नाम से निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

इस अवसर पर स्वामी जी के सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया जाना है जिसका सम्पादन डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण कर रहे हैं। स्वामी जी से परिचित महानुभावों से अपील है कि उनके बारे में अपने संस्मरणात्मक लेख अथवा कविता अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशानार्थ यथाशीघ्र भेजें। वेद, महर्षि दयानन्द, आर्य समाज, यज्ञ, योग के सम्बन्ध में रचनाएँ सदर आमंत्रित हैं। कृपया अपनी रचना निम्न पते पर भेजें।

- डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण, सम्पादक-स्वामी डॉ. दिव्यानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति

मुख्यालय : पातंजल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार-249407 (उत्तराखण्ड)

शाखा कार्यालय : ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष : 011'23274771, 23260985,

ई-मेल :- sarvadeshik@gmail.com, aryayouth@gmail.com

''मानव तस्करी, बंधुआ मजदूरी तथा बलात्कार की शिकार हुई घरेलू महिला कामगार को मुक्त कराया''

शहरी घरेलू महिला कामगार यूनियन, राष्ट्रीय घरेलू कामगार यूनियन एवं बंधुआ मुक्ति मोर्चा की संयुक्त पहल पर एवं थाना कोटला मुबारकपुर पुलिस के सहयोग से गुवाहाटी, आसाम निवासी सुश्री उमा (बदला नाम) उम्र लगभग 17-18 वर्ष को पता-1842, रविदास बस्ती, कोटला मुबारकपुर, दिल्ली क्षेत्र से एक प्लेसमेन्ट कम्पनी के ऐजेन्ट राज उर्फ राजेन्द्र के चंगुल से मुक्त कराया।

मुक्त हुई बालिका ने बताया कि उसे और उसकी दो अन्य सहेलियों को दो वर्ष पूर्व आसाम निवासी सुमित्रा नामक महिला घूमने के बहाने दिल्ली लेकर आई थी और उन तीनों को दिल्ली में उसने प्लेसमेन्ट कम्पनी के ऐजेन्ट राज उर्फ राजेन्द्र को बेचकर अपना रास्ता नापा। राज उर्फ राजेन्द्र ने बालिका को घरेलू कामगार के रूप में दिल्ली और फरीदाबाद में बेगार कराया अर्थात बालिका को दो वर्ष के दौरान कोई वेतन प्राप्त नही हुआ।

19 अगस्त, 2014 को राज उर्फ राजेन्द्र ने बालिका को फरीदाबाद से लाकर अपने घर में जबरदस्ती रखा और बालिका की अस्मत से अपना मुंह काला किया। बालिका के द्वारा इस कुकर्म का विरोध करने पर बालिका को राज के हाथों कई बार पिटना पड़ा। राज की बूढ़ी मां भी बालिका को हर रोज राज के पास जाने को मजबूर करती थी।

बालिका को मुक्त करने पहंची टीम के सदस्य शहरी घरेलू महिला कामगार यूनियन की अध्यक्ष श्रीमती अनिता कपूर, सामाजिक कार्यकर्ता श्री मसी प्रकाश एवं श्री पप्पू कुमार, राष्ट्रीय घरेलू कामगार यूनियन के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र रवि, व सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती सुनीता, दिल्ली स्कूल ऑफ शोसल वर्क्स के प्रथम वर्ष के छात्र श्री मोहित एवं सुश्री सुतनुका, तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यवाहक निदेशक निर्मल गोराना सहित कोटला मुबारकपुर थाने की पुलिस ने मिलकर बालिका को शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर दो वर्ष की गुलामी के नारकीय जीवन से मुक्त कराकर आज़ादी की राह प्रदान की। साथ ही

पुलिस ने IPC के सेक्शन 370 एवं 376 के तहत मुकदमा दर्ज कर राज को गिरफ्तार कर लिया और बालिका को अस्थाई रूप से प्रयास संस्थान में आश्रय प्रदान किया गया।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश जी की ओर से डी.सी.पी. साउथ दिल्ली एवं एस.डी.एम. डिफेन्स कॉलोनी तथा थानाधिकारी कोटला मुबारकपुर को पत्र प्रेषित कर बंधुआ मजदूरी उन्मूलन अधिनियम 1976, इन्टर स्टेट माईग्रेन्ट वर्कमेन्स एक्ट 1979, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948 के तहत कानूनी कार्रवाई कर बालिका को पिछले दो वर्ष का वेतन दिलाने ओर उसके पुनर्वास हेतु मुक्ति प्रमाण पत्र जारी करने की मांग की है।

शहरी घरेलू महिला कामगार यूनियन, राष्ट्रीय घरेलू कामगार यूनियन एवं बंधुआ मुक्ति मोर्चा का दावा है कि बड़े पैमाने पर गैर कानूनी रूप से आसाम, पश्चिम बंगाल, उड़िसा, झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ से महिलाओं एवं बच्चों को मानव तस्करी के जरिये लाया जा रहा है और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली जैसे शहरों में उनसे बंधुआ मजदूरी कराई जा रही है जहां महिलाओं एवं बच्चों का निर्मम शारीरीक, मानसिंक, लैंगिक एवं आर्थिक शोषण हो रहा है। घरेलू कामगारों के मुद्दे पर न तो दिल्ली सरकार का ध्यान है और न ही केन्द्र सरकार का। राज्य एवं केन्द्र सरकार का घरेलू कामगारों के प्रति बेरूखापन का व्यवहार अपराधियों को ताकतवर बना रहा है।

प्रेषक : मोहित एवं सुतनुका-दिल्ली स्कूल ऑफ सोशल वर्क्स, दिल्ली

thearyasamaj.org

NDPSo on 10/11 अक्टूबर, 2014 वैदिक सार्वदेशिक 09 से 15 अक्टूबर 2014
प्रकाशन की तिथि : 9 अक्टूबर, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

यज्ञ महिमा

**ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रं पदमंगिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त।।**

—ऋ० १०/६७/२ ; अथर्व० २०/९१/२

ऋषिः—अयास्यः।। देवता—बृहस्पतिः।। छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप्।।

विनय—'यज्ञ–यज्ञ' सब कहते हैं, परन्तु यज्ञ के मूलतत्त्व को जानने वाले कोई विरले ही होते हैं। हम तो इतना जानते हैं कि जगत्–हित के लिए स्वार्थत्याग के कार्य करना यज्ञ है। इतना ठीक भी है, परन्तु यज्ञ के प्रथम रूप से हम बहुत दूर हैं। यदि हमें कहीं वह रूप दीख जाए तब तो हम देख लें कि यज्ञ ही हमारा प्राण है, हमारा जीवन है; यज्ञ तो हमारे एक–एक श्वास में होना चाहिए। इस यज्ञ के 'प्रथम धाम' (मुख्य स्थान) को जो साक्षात् देख लेते हैं वे अंगिरस् कहाते है; क्योंकि ऐसे लोग इस जगत्–शरीर के अंगों के रस होते हैं। ये वे महात्मा पुरुष होते हैं जो संसार को ठीक रास्ते पर ले–जाते हुए संसार के प्राणरूप होते हैं। संसार में जो पाप, अधर्म और स्वार्थ की शक्तियाँ प्रवृत्त हो रही हैं उनसे संसार का जीवन–रस सूख जाए यदि ये 'अंगिरस्' उसमें निरन्तर धर्म–धारा न बहाते रहें। इन अंगिरसों को बार–बार प्रणाम है।

परन्तु हमें तो यह जानना चाहिए कि ये 'अंगिरस्' महात्मा कैसे बनते हैं?इनके लक्षण क्या हैं?इनके चार लक्षण हैं– (१) ये सत्य ही बोलते हैं, ये सत्य का ही वर्णन करते हैं। (२) केवल इनकी वाणी में ही सत्य नही होता किन्तु इनके ध्यान व विचार में भी कुटिलता नहीं आने पाती; इनके विचार में–मनमें–भी असत्यता नहीं आती (अतएव) इनकी बुद्धि इतनी सच्ची और प्रकाशपूर्ण होती है कि इन्हें समष्टि–बुद्धि–रूप जो 'द्यौ' है उसके पुत्र कहना चाहिए; और (३) ये वीर–पुत्र होते हैं, क्योंकि संसार सदा अज्ञान–शत्रु पर विजय पाने के लिए अग्रसर रहता है, (४) और ये 'द्यौ के पुत्र' अपने में 'विप्रपद' को, ज्ञानमय व्यापक पद को धारण किये होते हैं– भगवान् को, भगवान् के एक ज्ञानमय व्यापक रूप को, अपने में धारण किये फिरते हैं।

हे यज्ञकर्मों द्वारा ऊँचे चढ़ने की इच्छा रखने वाले और यत्न करने वाले भाइयो ! अंगिरसों के इन चार लक्षणों को अपने में रमाते चलो, रमाते हुए चढ़ते चलो।

शब्दार्थ—**ऋतं शंसन्तः**=सत्य ही कहने वाले, **ऋजुदीध्यानाः**=अकुटिल ध्यान करने वाले, **असुरस्य**=प्रज्ञावाले **दिवः**=दिव के, 'द्यौ' के **वीराः पुत्रासः**=वीर पुत्र, **विप्रं पदं दधानाः**=और जो ज्ञानमय या व्यापक पद को धारण किये हुए हैं, ऐसे **अंगिरसः**=अंगिरस लोग **यज्ञस्य प्रथमं धाम**=यज्ञ के परम मुख्य स्थान को **मनन्त**=जानते हैं।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

फेसबुक : Swami Aryavesh
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

।।ओ३म्।।
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय
वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।

durgarp@yahoo.in